पाठ 11. साँप की मणि

पाठ का परिचय

लेखक जहाज़ पर कोलंबो गए थे। वहाँ पहुँचने पर उनका दोस्त उन्हें मिला। खाने-पीने के बाद दोनों गप-शप करने बैठे। लेखक ने सीप और मोती की बात छेड़ी। तब उनके दोस्त ने कहा कि मैं तुम्हें एक ऐसी चीज़ दूँगा जो शायद तुमने कभी न देखी हो – वह है साँप की मणि। लेखक ने सुना था कि साँप की मणि का मोल सात बादशाहों के बराबर होता है। इसलिए उसकी बात सुनकर वे प्रसन्नता से उछल पड़े। लेकिन उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उनके दोस्त तथा दोस्त के मित्र ने मिलकर साँप की मणि कहे जाने वाले एक किस्म के पत्थर को लाकर उनके सामने रख दिया। यह पत्थर गर्म होकर अँधेरे में जलने लगता है। जब तक ठंडा नहीं हो जाता, वह इसी तरह रोशन रहता है। साँप इसे दिनभर मुँह में रखता है ताकि वह गर्म रहे। रात को वह उसे किसी जंगल में निकालता है और इसकी रोशनी में कीड़े-मकोड़े खाता है।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

आँखों देखी बात ही सच होती है। कहानियों को सच मानना मूर्खता ही होती है।

पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका कहानी का वाचन करें। प्रेमचंद के साहित्य की विशेषता से बच्चों को परिचित करवाएँ। कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। पाठ में आई कठिन पंक्तियों का आशय स्पष्ट करें। बच्चों से एक-एक अनुच्छेद पढ़वाएँ। अनुच्छेद से संबंधित प्रश्न पूछें। बच्चों को उनकी इच्छानुसार प्रश्न पूछने की छूट दें। बच्चों के मन की जिज्ञासाओं को सही उत्तर देकर शांत करें।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों पर आधारित चर्चा करें –

- क्या 'साँप की मणि' से संबंधित यह सत्य तुम पहले जानते थे?
- तुम इस सत्य पर विश्वास करते हो या नहीं? अगर नहीं तो क्यों?
- क्या तुम इस प्रकार के किसी अन्य सत्य के बारे में जानते हो?